A News Letter of Maitree Samooh
Issue IX • October to December, 2005

CHIRPING SPARROW

मैत्री समूह

O' Lord

When there is no light
Come & show the way
Show me the right path
Take my sorrows away.

When there is no hope
Come & show the way
Give me the ray of hope
Take my hopelessness away.

When there is war & sorrow
Come & show the way
Give me the power to
Put them away.

O Lord', help me to be on right path
So that, I may go on your way.
Give me the power to
Put my bad habits away.
I request you through my whole life.
"Come & show the way".

Shilpa Jain
Balaghat (M.P.)

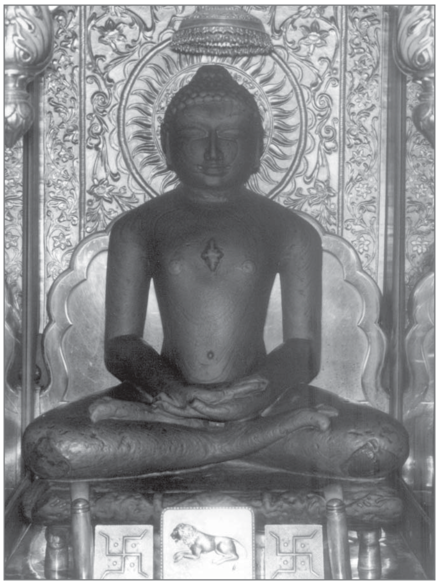

''दीपावली है
रोशनी और मुक्ति
का पर्व''

अवार्ड सेरेमनी विशेषांक

Pride of Socity

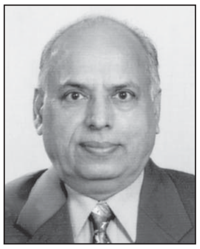

Suresh Chandra Jain, IAS (Retd.)

Former Secretary, M.P. State Election Commission, Bhopal

Shri Suresh Chandra Jain was born and brought up in a very common family at Siddh-Kshetra Nainaagiri near Sagar in Madhya Pradesh. By his dedication, talent, hard work and religious background, he earned such special achievements which have brought glory and pride to the entire Jain Community and are worthy of emulation by all others.

1. **Specialization** in the Management of Environment and Urban/Rural Development.
2. **35 Years of experience** of policy formulation, monitoring and implementation in the fields of Administration and management of Educational Institutions, Public Undertaking, Urban and Rural Development, Municipalities and Panchyats, and Land Management.
3. **Assignments**
   - I. ***Secretary, M.P. State Election Commission,*** Bhopal
   - II. ***Collector and District Magistrate,*** Hoshangabad, Vidisha and Betul.
   - III. ***Director,*** Public Instruction, Government of Madhya Pradesh
   - IV. ***Additional Commissioner,*** ST/SC Welfare, Madhya Pradesh
   - V. ***General Manager,*** Madhya Pradesh State Road Transport Corporation.
   - VI. ***Member Secretary,*** Committee constituted by Government of Madhya Pradesh for the formulation of a draft policy on the management of urban and rural housing and settlements.
   - VII. ***State level Coordinator*** of Building Centres in the State of Madhya Pradesh.
4. **First Class First and Gold Medalist** in S.S.C., H.S.S.C., B.Com, M.Com., and LL.B. Examinations and holder of National Merit Scholarship.
5. **Publications**
   - ***I. Books***
     - (i) M.P. Town Development Laws Manual :
     - (ii) Environment Laws in India :
     - (iii) M.P. Educational Laws Manual
     - (iv) Minorities Laws Manual
   - ***II. Papers and Articles***

     More than 100 papers and articles published in National and State periodicals and dailies.
6. ***Visiting Professor and Examiner*** of National Institutions and Universities.
7. ***Visiting Scholar***
   - Harvard University,
   - Harvard Law and Business School,
   - MIT, Cambridge MA 02139 U.S.A.
   - School of Oriental and African Studies and Foundation for International Environmental Law and Development (FIELD) University of London. Russel Square, London WCIH OXG.
8. Managing Director - Vidyasagar Institute of Management, Bhopal
9. Attended and presented papers in International Conferences.

CHIRPING SPARROW

Year-3, Issue-IX

Chirping Sparrow is published quarterly by the Maitree Samooh.

It is circulated to all Young Jaina Awardees and friends of Maitree Samooh.

E-mail : maitreesamooh@hotmail.com • maitreesamooh@yahoo.com

website : www//maitreesamooh.com

Mobile : 9425132090

पुनर्जन्म और विज्ञान
(Reincarnation & Science)

आपको पिछले जन्म की एक भी बात याद है? क्या थे आप पिछले जन्म में? - ऐसा कोई भी सवाल इस अति विज्ञानी युग में बेहद हास्यास्पद मालूम पड़ता है। असल में, विज्ञान हम पर इस तरह हावी हो चुका है कि विज्ञान जो कहे सो सच शेष सब ग़लत। पुनर्जन्म की बात अंधविश्वास या पिछड़े हुए धार्मिक एवं कर्मकाण्डी लोगों की देन लगती है। हमें हर बात विज्ञान के चश्मे से देखने की आदत बदलनी पड़ेगी। श्रद्धा, विश्वास और अनुभूति का भी एक विज्ञान है। कुछ बातों का समाधान हिसाब-किताब से नहीं, श्रद्धा और अनुभव से भी होता है।

पुनर्जन्म का सिद्धान्त श्रद्धा और अनुभव के साथ-साथ आधुनिक विज्ञान सम्मत जीनोम अध्ययन द्वारा भी सिद्ध किया जा रहा है। व्यक्ति के भीतर होने वाले परिवर्तनों के बारे में विज्ञान यह कहने लगा है कि पीढ़ी-दर-पीढ़ी जीन के कारण ऐसा होता है। इस तरह जेनेटिक्स ने अब परा मनोविज्ञान के क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण योगदान देना शुरू कर दिया है। व्यवहारिक जेनेटिक्स अब इस बार ध्यान दे रहा है कि मानसिक गुण, जैसे - दृष्टिकोण, बुद्धिमानी, भय आदि जन्मजात भी होते हैं। जीव के साथ दूसरे भव में ज्ञान, दर्शन आदि गुण सदा साथ रहते हैं, यह बात जैन मनीषी भी कहते हैं। फरवरी 2001 में जब जीनोम की खोज के पहले परिणाम सामने आए थे तो बहुतों का ध्यान भारतीय संस्कृति के द्वारा निर्देशित पुनर्जन्म की ओर आकर्षित हुआ। नए जन्मे बच्चों में बुद्धिमानी आदि कम-ज्यादा होने की बात को पिछले जन्म के अपने अभ्यास (कर्म) के आधार पर आसानी से समझा जा सकता है।

अनादि काल से प्रत्येक जीव (आत्मा) जन्म-मृत्यु की शृंखला से गुजरता हुआ अपना अस्तित्व बनाए रखता है। यही तथ्य पुनर्जन्म को सिद्ध करता है।

पुनर्जन्म को लेकर दो मुख्य बातें सामने आती हैं। यदि जीव का पूर्वभव होता है तो उसे उसकी स्मृति होना चाहिए एवं जीव की गति-आगति का ज्ञान हमें या सभी लोगों को हो जाना चाहिए। इसका समाधान पाने के लिए हमें स्वयं विचार करना चाहिए। बचपन की घटनाएँ हमें बड़े होने पर स्मरण में नहीं आतीं इसी तरह पूर्वभव की विस्मृति संभव है। जिसे जाति स्मरण अर्थात् पूर्वभव संबंधी बातों को जान पाने की शक्ति जागृत हो जाती है वह पूर्वभव संबंधी घटनाओं का साक्षात्कार करने में सक्षम हो जाता है।

दूसरी बात कि नहीं दिखाई पड़ने मात्र से किसी वस्तु का अभाव अपन सिद्ध नहीं कर सकते। अँधेरे में या आँखों के अभाव में चीज होते हुए भी दिखाई नहीं देती। दिन में सूर्य के प्रकाश में भी तारे दिखाई देते हैं।

प्रत्येक पदार्थ में परिवर्तन होता है। परिवर्तन से पदार्थ एक अवस्था को छोड़कर दूसरी अवस्था में चला जाता है किन्तु न तो वह सर्वथा नष्ट होता है और न सर्वथा उत्पन्न होता है वह मात्र रूप परिवर्तित करता है और अपना अस्तित्व कायम रखता है। जैसे - यात्री एक स्थान को छोड़कर दूसरी जगह रहने चला जाता है। उसका ट्रान्सफर (स्थानान्तर) हो जाता है। पुनर्जन्म में भी जीव संसार में रहते हुए मात्र अपनी पर्याय (रूप) बदल लेता है। दार्शनिकों ने कहा कि जैसे शरीर पर नए वस्त्र धारण करने वाला पुराने वस्त्र उतारकर अलग कर देता है ऐसे ही जीव संसार में नयी देह धारण करता है। देह धारण करने को जन्म और देह छोड़ने को ही मरण कहते हैं। जीव यथावत् बना रहता है।

पुनर्जन्म के विषय में वैज्ञानिक अनुसंधान का कार्य परामनोविज्ञान के क्षेत्र में किया गया है। परामनोविज्ञान के अन्तर्गत तीन चीज़ों का समावेश किया गया है - प्राक्कल्पनाएँ (हाइपोथीसिस) प्रेक्षण (आब्जर्वेशन) एवं प्रयोग (एक्सपेरीमेन्ट्स) वैज्ञानिक दृष्टिकोण से विश्लेषण करने पर पुनर्जन्म की प्रामाणिकता इस बात पर आधारित है कि पूर्वजन्म की स्मृति की घटनाओं की वास्तविकता कितनी है। जैसे - अमर उजाला 13 जनवरी 2002 के रविवारीय में प्रकाशित एक घटना -

कानपुर में सुधा के पिता सुखदेव राय सिन्हा ने अब से करीब दो दशक पहले बताया कि बेत्थर की एक बच्ची कहती है कि पिछले जन्म में वह कानपुर में रहती थी अपना नाम सुधा बताती थी और कहती थी कि उसके डॉक्टर पति ने उसकी हत्या कर दी थी। बेत्थर में ढाई साल की बच्ची (मीनू) की बात सच साबित हुई। ढाई साल की मीनू ने कानपुर में अपने पिछले घर और रिश्तेदारों को पहचान लिया। सुधा के भाई आर.डी. सिन्हा, जो पुनर्जन्म में विश्वास नहीं रखते थे, उन्हें भी मीनू ने पहचान लिया। मीनू ने एलबम दिखाए जाने पर घर से सभी सदस्यों को पहचान लिया एवं सुधा के पति विनय के फोटो को फाड़कर तहस-नहस कर दिया। निजी बातचीत में सिन्हा के परिवार को पक्के तौर पर विश्वास हो गया कि वह पूर्वजन्म में सुधा थी।

सुधा की मृत्यु अक्टूबर 1978 में हुई थी और मीनू का जन्म 13 महीने बाद हुआ। आज मीनू कालेज में पढ़ती है और पिछले जन्म की सारी बातें भूला चुकी है। दोनों परिवारों में हालाँकि आज भी संबंध कायम है।

यह पुनर्जन्म की अकेली घटना नहीं है ऐसे और भी अनेकों उदाहरण हैं जो पुनर्जन्म के अस्तित्व पर सोचने को मजबूर कर देते हैं।

मनोचिकित्सक डॉ. इवान स्टीवेंशन ने ऐसे 20 केसों पर रिसर्च करके ''ट्वेंटी केसेज सजिस्टिव ऑफ रीइन्कारनेशन'' नामक पुस्तक में पुनर्जन्म व उससे संबंधित अनेकों घटाओं का उल्लेख किया है।

साइंस इन मामलों को अभी तक न तो नकार सका है और न ही इनको प्रमाणित कर सका है। *Contd.*

→

Some believe that when a person dies, nothing remains. That death is the end of his personality and that there is no trace of him thereafter. Others disagree with this view. They do not consider death as finality. They believe in the continuity of life and that the present incarnation is only a link in the chain of his entire life.

When the person dies, his gross body perishes in that form. The material of the body merges with earth. Science declares that something cannot pass in to nothing. So speaks the law of indestructibility of matter, the law of conservation of energy. The same law should apply to the subtle body that comprises his thoughts, feelings and desires, resulting from his mental and intellectual forces. His inner energy comprises subtle matter. The energy of subtle body can not vanish at the time of death, In this world the birth and death are innumerable.

Reincarnation is the passing of soul from one body to the next. Life is truly a circle of birth, death and rebirth, Reincarnation is also known as the transmigration of soul. It teaches that after we die we are reborn on the earth again.

The doctrine of reincarnation alone can explain the inequality seen in the world. Why is one man born rich and the other poor? Why is one man healthy and strong and another man weak and unhealthy? Why one man lives for 30 years and another for 80 years? Why one man is a king and another a labour in the field? What is the cause of this apparent injustice? The cause of this apparent injustice is the force of its own Karmas (actions). As a matter of fact, law of Karma is nothing but an application of the law of cause and effect, scientifically applied to human activities, as it is applied to every other science. Hence the doctrine of Reincarnation and Karma are an attempt to solve the riddles of life, death and final liberation (Nirvaann). Nirvaann (Moksh) is the total elimination of Karma from the Jeeva. The Jeeva (Soul) gets freedom as soon as it attains this stage.

We get our bodies according to our desires, tendencies and powers. If any person has no desire to come back to this world or to any other and does not want to enjoy any particular object of pleasure, and if he perfectly frees from selfishness, that person will not have to come back.

The individual soul enjoys or suffers according to the acts it performs. All enjoyment and suffering are but the reactions of our actions. Actions are the causes and the reactions are the results. Our present life is the result of our past actions and our future will be the result of the present. Each human soul is nothing but a center of thought-force. This center is called “Suksham Shareer" or the subtle body of an individual (Kaarmann Shareer).

Every effect must have a cause. Something can not come-out of nothing. Existence can not come out of non-existence. This is the fundamental principle of modern science. This is the fundamental doctrine of philosophy also. You have not come out of nothing. There is a cause of one’s existence here.

The cause is the unmanifested condition of the effect. The effect is the manifested cause of the effect. It is like tree and seed. Tree is the effect. Seed is the cause. The whole tree remains in the seed in the potential form.

Within the gross physical body, there is another subtle body. This subtle body comes out with all its impressions and tendencies at the time of death of the gross physical body. It is like seed. It can not be seen by naked eye. It is the subtle body that migrates. It manifests again in a gross form. This re-manifestation of the subtle form in to the gross physical form is called the law of reincarnation.

Some of the objections raised against are the truth of the theory of Reincarnation are - One does not remember past lives; one should not be held responsible for forgotten deeds; the theory of Reincarnation conflicts with the evidence of heredity and orientals and people who believe in Re-incarnation are not progressive.

The answer to the first two objections is that the memory is not the test of existence. Even in one life, a man may completely forget one’s identity and imagine one self to be some one else. Many such cases, well authenticated are on record.

People wrongly imagine that re-incarnation and heredity are conflicting theories. Due to the presence of unchanging cosmic law for every thing in nature, heredity is the law through which the incarnating soul works, A son is not like his father simply because he was born to him but because the soul of the son had chosen to reincarnate in that family; because the material and mental qualities of ego of son would find it most convenient and harmonious to manifest through just such a family. Cosmic law compels an ego to become incarnate through a body and mind which most suitably express the karma and experience of the evolving ego.

The sufferings of the virtuous man and the pleasures of the vicious make us believe in reincarnation, since it explains that the past good actions of a man will bring him joy in this life, even though by his present evil actions, he is storing up future suffering for himself. Similarly the good man is laying away future treasures for himself, even though he may at present be suffering from the effects of evil deeds in lives gone by.

God does not punish or award any one. Man reaps the fruits of his karma. He reaps a harvest of pleasure for his good actions. He suffers and experiences pain and disease, loss of property for his wicked actions.

❑❑❑

आपके प्रश्न

Q. यदि हमसे किसी जीव की हिंसा उसे बचाते समय हो जाए तो कितना दोष माना जावेगा? डॉक्टर बनने के दौरान होने वाली हिंसा को हम किस श्रेणी में रखेंगे? **राहुल जैन,** जयपुर
प्राची जैन, अशोकनगर
सोनिका जैन, भोपाल

अहिंसा हमारी जीवनी शक्ति है। हमारे मन, वाणी और कर्म को सही दिशा में ले जाने और उनका सदुपयोग करने में सहायक है। वह हमें सामर्थ्यवान और समृद्ध बनाती है। अहिंसा का क्षेत्र व्यापक है। दया, करुणा, प्रेम, मैत्री सहअस्तित्व की भावना आदि इसी के विविध रूप हैं। किसी भी प्राणी को नहीं मारना या पीड़ा नहीं पहुँचाना - यह अहिंसा का एक पहलू है। अहिंसा का भावनात्मक महत्वपूर्ण दूसरा पहलू यह भी है कि किसी भी जीव को पीड़ा पहुँचाने का विचार भी मन में नहीं लाना। सभी जीवों की रक्षा का भाव रखना और सभी जीवों से प्यार रखना।

पूर्णतः अहिंसा की साधना करने वाले साधुजन सब जीवों का भला चाहते हैं और अपना जीवन ऐसी सावधानी से जीते हैं कि जिससे उनके द्वारा किसी को क्षति न पहुंचे। वे शत्रु-मित्र दोनों के प्रति साम्य-भाव रखते हैं।

सद्गृहस्थ स्थूल रूप से अहिंसा का पालन करता हुआ जीवों के प्रति दया, करुणा और प्रेम-भाव रखकर अपने गृह-संबंधी कार्य या आजीविका अत्यन्त सजगता और सावधानी रखकर सम्पन्न करता है। वह संकल्पपूर्वक किसी जीव को मारने, मरवाने या पीड़ा पहुँचाने का भाव नहीं रखता। कसाइयों के द्वारा प्रतिदिन अनेक पशुओं को अपनी आजीविका के लिए मारना या मरवाना, आतंकवादी गतिविधियों में संलग्न रहना, पशुओं को मनोरंजन की दृष्टि से आपस में लड़वाकर आनंदित होना, अपने भोजन या मनोरंजन के लिए पशुओं का शिकार करना, धर्म के नाम पर पशुओं या मनुष्यों की बलि देना, पति के मरने पर उसके साथ ही चिता में जलकर मर जाना, अथवा आत्मघात कर लेना ऐसी संकल्पपूर्वक की जाने वाली हिंसा गृहस्थ के लिए अत्यन्त दोषयुक्त होने से वर्जनीय है। घरेलू कार्यों, जैसे - भोजन बनाने, झाड़ू-बुहारी करने आदि में होने वाली हिंसा से गृहस्थ बच नहीं सकता। ऐसी आरंभी हिंसा उसे क्षम्य है। इसी प्रकार आजीविका के लिए खेती या अल्पतम हिंसाजनित, व्यापार-व्यवसाय, शिल्पकला आदि में होने वाली हिंसा से भी वह बच नहीं पाता। ऐसी उद्योगी हिंसा भी उसे क्षम्य है। अपने परिवार, समाज, राष्ट्र एवं स्वयं के प्राणों की रक्षा अर्थात् आत्मरक्षा के लिए उसके द्वारा हो जाने वाली विरोधी हिंसा भी उसे क्षम्य है।

वह बेवजह निःप्रयोजन किसी भी जीव के लिए क्षति नहीं पहुँचाता और Minimization of Violence का ध्यान रखता हुआ अपने जीवन का निर्वाह करता है। जो विद्यार्थी मेडीकल साइंस पढ़ते हैं और कुशल डॉक्टर बनकर लोगों की पीड़ा दूर करते हैं या प्राण-रक्षा करते हैं उनके द्वारा पढ़ाई के दौरान होने वाली हिंसा को हम संकल्पी-हिंसा कहकर अत्यन्त दोषयुक्त या वर्जनीय नहीं कह सकते। डॉक्टर के द्वारा पेशेन्ट का ऑपरेशन करते समय कदाचित् मरण हो जाने पर भी डॉक्टर को अपराधी नहीं माना जा सकता; क्योंकि उसके भाव और कार्य तो पेशेन्ट को बचाने के लिए थे।

Q. जैन आगम के अनुसार चाँद पर कोई जा नहीं सकता पर वर्तमान भूगोल (विज्ञान) के अनुसंधानों के अनुसार यह सिद्ध हो चुका है कि मानव चंद्रमा पर जा सकता है। इसमें से कौन सी बात सच मानें। कृपया स्पष्ट कीजिएगा?
एकता सिंघई, अशोकनगर (म.प्र.)

जैन मनीषियों के अनुसार पृथ्वी स्थिर है। सूर्य व चंद्र ये ज्योतिषी देवों के विमान हैं। जो पृथ्वी- कायिक है। इस पर ज्योतिषी देव के आवास एवं अकृत्रिम जिनालय बने हुए हैं। मनुष्यलोक (ढाई द्वीप) में विद्यमान सूर्य व चंद्र विमान सुमेरू पर्वत के चारों ओर अपनी Orbit में घूमते रहते हैं। ढाई द्वीप के बाहर ये स्थिर हैं घूमते नहीं हैं।

समुद्र सतह से सूर्य का विमान 800 योजन (एक योजन=4000 मील) ऊपर एवं चन्द्र विमान 880 योजन ऊपर जाकर अन्तरिक्ष में विद्यमान है। सूर्य का विमान जो कि पृथ्वीकायिक है उसमें पृथ्वीकायिक जीवों के आतप नामक नामकर्म का उदय है। आतप नामकर्म के उदय से वह मूल में ठण्डा एवं उसकी किरणें गरम हैं। चन्द्र का विमान भी जो कि पृथ्वीकायिक है उसमें पृथ्वीकायिक जीवों के उद्योत नामक नामकर्म का उदय है। उद्योत नामकर्म के उदय से वह मूल में ठंडा एवं उसकी किरणें भी शीतल हैं।

चन्द्रमा को इन्द्र माना गया है और सूर्य को प्रतीन्द्र। चन्द्रमा की शक्ति का अंदाजा इस बात से भी अपन लगा सकते हैं कि वह सूर्य के तीव्र प्रकाश में भी आकाश में दिखाई देता रहता है। चंद्रमा के परिवार में एक चंद्रमा, एक सूर्य, 88 ग्रह, 28 नक्षत्र एवं 66975 तारे होते हैं। मनुष्य लोक (जम्बूद्वीप, लवण समुद्र, घातकी खण्ड कालोदधि एवं पुष्कराद्ध द्वीप) में कुल 132 चंद्रमा, 138 सूर्य, 11616 ग्रह, 3696 नक्षत्र एवं 8840700 तारे होते हैं। वर्तमान विज्ञान के अनुसार अनंत आकाश गंगा है जो इस बात की पुष्टि करती है।

मनुष्य लोक में मनुष्य एवं तिर्यंच (पशु-पक्षी) कहीं भी देवों या विद्याओं के माध्यम से गमन कर सकते हैं।

बालक तीर्थंकर का जन्माभिषेक सुमेरू पर्वत (समुद्र सतह से 1 लाख योजन ऊँचा) पर ले जाकर इन्द्र व देवगणों के द्वारा किया जाता है। इसलिए जैन आगम के अनुसार चंद्र विमान तक मनुष्य या तिर्यक का पहुँचना असंभव नहीं है। कुछ वर्तमान वैज्ञानिक यंत्र के माध्यम से चंद्रमा पर पहुँचना सिद्ध करते हैं और कुछ वैज्ञानिक इस बात को नहीं मानते। इसलिए चंद्रमा पर पहुँचने की बात पर सभी वैज्ञानिक एक मत नहीं हैं। चंद्रमा का विमान पृथ्वी-कायिक होने से वहाँ पर मिट्टी, पत्थर ही मिलेंगे। चंद्रमा पर रहने वाले ज्योतिषी देवों का वैक्रियक शरीर होने से मनुष्य को

आँखों से दिखाई नहीं पड़ेगा और वहाँ स्थित अकृत्रिम जिनालय के दर्शन के लायक सातिशय पुण्य वर्तमान जीवों के नहीं है।

इस तरह जैन आगम के अनुसार चंद्र विमान तक देवों या विद्याओं के माध्यम से पहुँचना असंभव नहीं है। रही बात चंद्रमा पर पहुँचने न पहुँचने की सो इस बात पर वैज्ञानिक भी एक मत नहीं हैं।

Q. कहीं-कहीं भगवान की प्रतिमाओं के रंग में परिवर्तन देखने में आया है। सच्चाई क्या है? कृपया स्पष्ट करें।

मोहिनी जैन, सागर (म.प्र.)

A. यदि श्रद्धा की आँख से देखें तो यह देवों के द्वारा किया गया अतिशय (असाधारण-घटना) मालूम पड़ेगा। इससे हमारी आस्था, वीतरागता के प्रति बढ़नी चाहिए, चमत्कार के प्रति नहीं। यदि इसे वैज्ञानिक दृष्टि से देखें तो यह मात्र एक रासायनिक परिवर्तन है चमत्कार जैसा कुछ नहीं है। आप इस तरह की घटना को श्रद्धा और विज्ञान दोनों तरह से देखें। यह विवाद का मुद्दा नहीं है। हम सभी अल्पज्ञ है इसलिए सच्चाई तक आसानी से पहुँचा नहीं जा सकता। सच्चाई की व्याख्या सदा सापेक्ष (रिलेटिव) होती है। 'एब्साल्यूट-टुथ' को कहा नहीं जा सकता। उसे अनुभव किया जा सकता है। हम वीतरागता के प्रति अपनी आस्था सुदृढ़ बनाएँ।

Q. कुछ धर्मस्थानों पर देवों के द्वारा मनोकामनाओं की पूर्ति होते देखी जाती है। इसमें सच्चाई कितनी है? कृपया स्पष्ट करें!

प्राची सोधिया, सागर (म.प्र.)

A. देवों के द्वारा मनोकामनाएँ पूर्ण हो सकती हैं क्योंकि देवों के पास श्राप देने और अनुग्रह करने की सामर्थ्य होती है। इसे 'प्रभाव' कहते हैं। लेकिन ध्यान रहे कि मनोकामनाओं की पूर्ति में मात्र देवों का ही प्रभाव मुख्य हो ऐसा नहीं है। मनोकामनाओं की पूर्ति व्यक्ति के पुण्य-पाप पर निर्भर है। जैनदर्शन में कार्य-कारण व्यवस्था सर्वोपरि है। मनोकामनाओं की पूर्ति में अन्तरंग व बहिरंग दोनों कारण होना अनिवार्य है अंतरंग कारण तो व्यक्ति का पूर्व पुण्य है तथा बहिरंग कारण देव या अन्य हितैषी व्यक्ति भी हो सकता है। यही सच्चाई है।

Q. रक्तदान या शरीर के किसी अवयव का दान जैनधर्म के अनुसार उचित है या नहीं? कृपया स्पष्ट करें!

सोनम जैन, सागर (म.प्र.)

A. जैनदर्शन में दो तरह के दान का उल्लेख मिलता है - लौकिक दान और पारलौकिक दान। निर्दोष आहार, औषधी आवास और उपकरण (शास्त्र, पीछी, कमण्डलु) इन चार रूपों में वीतराग-मार्ग पर चलने वाले त्यागी व्रती-जनों को जो दान किया जाता है वह पारलौकिक-दान कहलाता है। जिसके द्वारा सम्यग्दृष्टिजीव पुण्यार्जन एवं कर्मों की निर्जरा करके आत्मा का हित करता है। जो लोक व्यवहार में सद्‌भावनापूर्वक किए जाते हैं उनके तीन भेद हैं - सकल दत्ति, समदत्ति और दयादत्ति। अपने योग्य पुत्र को अपनी कुल परम्परा, धर्म परम्परा एवं धन सम्पदा सौंपना सकल-दत्ति कहलाता है। अपने समान आचार-विचार वाले परिवार में अपनी कन्या देना समदत्ति या कन्यादान है। तथा अभावग्रस्त, रोग-शोक से पीड़ित मरणासन्न व्यक्ति की दया-भाव से यथायोग्य मदद करना दयादत्ति या करुणा-दान कहलाता है। प्राणों की रक्षा के लिए योग्य व्यक्ति (शाकाहारी एवं व्यसन युक्त) को रक्तदान, या शरीर के अन्य अवयव देना इसी करुणादान के अंतर्गत माना गया है।

ध्यान रखें कि यशख्याति या धन-सम्पत्ति की लालसा रखते हुए अयोग्य व्यक्ति को जो भी दान दिया जाता है वह लाभकारी नहीं है।

Q. क्या जैन धर्म मूर्तिपूजा में विश्वास रखता है? कृपया स्पष्ट करें।

निशान्त जैन, मेरठ (उ.प्र.)

A. जैनधर्म मात्र मूर्तिपूजा (बुतपरस्ती) में विश्वास नहीं रखता। जैनधर्म में वीतराग प्रतिमा का आलम्बन लेकर पंचपरमेष्ठी की पूजा अर्चना की जाती है। मूर्ति हमें वीतरागता का पाठ सिखाती है। इसलिए हम जिनेन्द्र भगवान की वीतराग, शान्त, यथाजात बालकवत् निश्छल व निरावरित मुद्रा को प्रतीक बनाकर अपने भीतर वीतरागता को उद्‌घाटित करने का सद्‌प्रयास करते हैं। वीतराग मूर्ति में हम गुणों का प्रोजेक्शन करते हैं और उससे स्वयं को जोड़कर एकाग्र होने की कोशिश करते हैं। इसे साइक्लॉजी में लॉ ऑफ एसोसिएशन कहा जाता है।

Q. मूँगफली जमीन में उगती है, अदरख, हल्दी सुखाकर खाते हैं क्या ये अभक्ष्य नहीं कहलाएँगे?

अनुभा जैन, देवरी, सागर (म.प्र.)

A. मूँगफली जमीकंद नहीं है वह वायवीय पौधा है (Arial Roots)। इसकी जड़ों को जिसमें मूँगफली लगती है, आर्द्रता, शीतलता व जंगली चूहों से सुरक्षा की दृष्टि से मिट्टी से ढक दिया जाता है। मूँगफली के दाने के ऊपर एक कठोर छिलका होता है जिससे वह सीधे जमीन के कान्ट्रेक्ट में नहीं आती। मूँगफली के दाने पक जाने तक पौधा अपना जीवन-चक्र पूरा कर लेता है उसे जमीकंद की तरह हरी-भरी दशा में नष्ट नहीं करना पड़ता। इसलिए मूँगफली में जमीकंद के समान दोष नहीं है वह अभक्ष्य नहीं मानी गयी।

हल्दी व अदरख - दोनों जमीन के भीतर मात्र 4-6 इंच तक रहते हैं। ये स्वयं जीवाणुओं के प्रतिरोधक हैं इसलिए इनके आसपास जमीकंद की तरह जीवाणु उत्पन्न नहीं हो पाते तथा सूख जाने पर ये जीवाणु रहित हो जाते हैं। अन्य जमीकंद सूखने पर भी जीवाणु रहित नहीं हो पाते, जैसे आलू की चिप्स आदि। इसलिए इन्हें औषधी या मसालों की तरह (सूख जाने पर) उपयोग में लेने का निषेध नहीं किया गया है। (जमीकंद के बाबत जानकारी चर्पिंग स्पेरो के अंक III Apr. to June '2004 में पढ़ें।)

सूचना

1. वर्तमान में बढ़ते हुए कोचिंग के फैशन को देखकर मैत्री समूह ने सोचा है कि जो आर्थिक दृष्टि से अभावग्रस्त जैन विद्यार्थी महँगी कोचिंग करने में सक्षम नहीं हैं उनकी मदद हम करें। 'जिन बच्चों ने पूर्व में कोचिंग ली है वे अपने नोट्स मैत्री समूह को प्रदान कर दें और इच्छुक बच्चे नोट्स (फोटो कॉपी) समूह से प्राप्त करके अपनी तैयारी घर बैठे करें।
2. अवार्ड सेरेमनी (JYA 2005) की CD उपलब्ध है। आप 30/- मनीआर्डर भेजकर मैत्री समूह के पास से प्राप्त कर सकते हैं।

An SMS chat that changed my life

By I, My, Myself

God: Hello. You called me.

I, My, Myself: Called you? No, who is this?

God: This is God. I heard your prayers. So I thought I will chat with you.

IMM: Sure, I pray. Just makes me feel good. Actually, am busy now. In the midst of something, you know.

God: What are you busy with? Ants are busy, too.

IMM: Don't know. But I can't find free time. Life has become hectic. It's rush hour all the time.

God: Sure. Activity gets you busy. But productivity gets you results. Activity consumes time. Productivity frees it.

IMM: But I still can't figure it out. By the way, I was not expecting YOU to buzz me on instant messaging chat.

God: Well, I wanted to help you resolve your fight for time by giving you some clarity. I wanted to reach you through the medium you are comfortable with.

IMM: Tell me, why has life become so complicated?

God: Stop analyzing life. Just live it. Analysis is what makes it complicated.

IMM: Why are we then constantly unhappy?

God: Your today is the tomorrow that you worried about yesterday. You are worrying because the act of worrying has become a habit. That's why you are not happy.

IMM: But how can we not worry when there is so much uncertainty?

God: Uncertainty is inevitable, but worrying is optional.

IMM: But then, there is so much pain due to uncertainty.

God: pain is inevitable, but suffering is optional.

IMM: If suffering is optional, why do good people always suffer?

God: Diamonds cannot be polished without friction. Gold cannot be purified without fire. Good people go through trials. With that experience their life becomes better, not bitter.

IMM: You mean to say such experience is useful?

God: Yes, Experience is a hard teacher, though, She gives the test first and the lessons afterwards.

IMM: But still, why should we go through such test? Why can't we be free from problems?

God: Problems are Purposeful Roadblocks Offering Beneficial Lessons to Enhance Mental Strength. Inner strength comes from struggle and endurance, not when you are free from problems.

IMM: Frankly in the midst of so many problems, we don't know where we are heading.

God: If you look outside you will not know where you are heading. Look inside. Looking outside, you dream. Looking inside, you awaken. Eyes provide sight, Heart provides insight.

IMM: Sometimes I ask, who am I, why am I here? I don't know the answers.

God: Seek not to find who you are, but to determine who you want to be.

IMM: Sometimes not succeeding fast seems to hurt more than moving in the right direction.

God: Success is relative, quantified by others. Satisfaction is absolute, quantified by you. Knowing the road ahead is more satisfying than knowing you rode ahead.

IMM: Something I ask, who am I, why am I here? I don't know the answers.

God: Seek not to find who you are, but to determine who you want to be. Stop looking for a purpose as to why are here. Create it. Life is not a process of discovery but a process of creation.

IMM: How can I get the best out of life?

God: Face your past without regret. Handle your present with confidence. Prepare for the future without fear.

IMM: Sometimes my prayers are not answered.

God: There are no unanswered prayers. At times the answer is NO.

IMM: Thank you for this wonderful chat. I'll try to be less fearful

God: Keep the faith and drop the fear. Life is a mystery to solve, not a problem to resolve. Life is wonderful if you know how to live.

Jain College : Key to Success

Jain college is a unique college for higher professional studies founded by "Manodeep Higher Education Sociery, Gwalior" in the year 2000. It is inspired by the great philosophy of Jainism i.e. Service to Mankind. The college is recognized by the "Ministry of Higher Education Govt. of M.P.", "Approved by NCTE" and "Affillated to Jiwaji University, Gwalior".

The Campus of Jain College has been developed on a prominent spacious site on an area of 4 acres at Chirwai Naka, Shivpuri Link Road, at a distance of about of 3 km. away from the heart of the city, Gwalior.

Jain College offers various courses like : B.Ed. (Approved by NCTE & SCERT), M.Sc. Biotechnology & Microbiology, B.C.A., B.B.A., B.Com. General & with computer, PGDCA. To promote the interest of meritorious and poor students of Jain Samaaj towards education, the college provides scholarship programm. For those students who are not able to pay the amount of fee but are desirous to acquire higher education, Jain college helps in taking education loan from the Banks.

For further details contact:

Jain College, Opp. Little Angel H. School, Gudi Guda Ka Naka, Lashkar, Gwalior (M.P.)
Phone : 0751-2433064, 2433074, 94251-22474
Website : www.jaincollege.org, E-mail : jainson@india.com
City Office : Naya Bazar, Lashkar, Gwalior (M.P.) Ph. : 0751-2410922, 2623537

CARRIER PLANNING

Road Map

- Right career choice
- Optimise strengths
- Aptitude for Achievement
- Do as per plan
- Motivate self
- Attitude to reach Altitude
- Passion for completing the Journey

Right Career

- Know your personality type
- Discover your vocational strengths
- Collect information about emerging Careers
- Choose the career that fits you Head & Heart

Optimise you strengths

- Learn to leverage strengths

Appreciate the half full glass

- Believe in self
- You are "what you think you are"
- Everyone has limitation.

Motivate self

- Develop intrinsic drive
- Respect your self
- Don't wait for external Reward/ Panalty
- Enjoy achieving

Attitude for Altitude

- Be positive
- Look for brighter things
- Move Forward
- Win-Win
- Give Positive views
- Live Indian values
- Learn from Religious preachings

Passion for completing the Journey

- Never give up
- Have patience
- Develop tolerance to Frustation
- Take problems an opportunities
- See the day after every night
- Keep moving

Parents to Co-operate

- Don't impose ideas
- Consult Export (not uncleji)
- All Balloons can fly
- Listen to your wards
- Set Examples
- Don't make unpleasant comparisons
- Help eradicable stress
- Don't ask for unreasonable performance
- Appreciate the Generation Gap

Students to please note

- Have a Road map
- Use IT for information
- Be pro-active
- Be Alert
- Look for other buses
- Have consistency
- Enjoy what you have decided to do
- Combine qualification, personality and drive.

Indian students will be Global Managers because they have competitive strength.

Dr. G.P. Rao
VP, HR, JK Industries Ltd.

''**श्री राजकुमार बड़जात्या (कोटा)** का निधन मुनि श्री क्षमासागरजी के सान्निध्य में ग्वालियर नगर में दिनांक 17 नवम्बर, 2005 को गया। उनके आकस्मिक निधन पर मैत्री-समूह परिवार अपनी संवेदनायें व्यक्त करता है। आप श्रीराम फर्टीलाइजर, कोटा के वाइस प्रेसीडेन्ट थे। आपने कलकत्ता और अमेरिका में शिक्षा प्राप्त की थी। सामाजिक क्षेत्र में आपका दान सदैव अनुकरणीय एवं प्रशंसनीय रहा। आप सामाजिक क्षेत्रों में अग्रणी पदों पर रहे।

आप मैत्री समूह के वरिष्ठतम कर्मठ व्यक्तित्व थे।''

AN OVER VIEW (YJA 2005)

आचार्य श्री विद्यासागर जी के शिष्य मुनिश्री क्षमासागरजी एवं मुनिश्री भव्यसागरजी महाराज के सान्निध्य में यंग जैना अवार्ड शिवपुरी, जयपुर, रामगंजमण्डी और अशोकनगर के उपरान्त पाँचवें वर्ष मुरैना नगर में 5-6 नवम्बर 2005 को सानन्द सम्पन्न हुआ। जिसमें मैत्री समूह के द्वारा लगभग 1447 जैन छात्र-छात्राओं को सम्मानित किया गया जो कि पिछले वर्षों की अपेक्षा सर्वाधिक संख्या थी। समूचे भारत के 19 राज्यों और 14 परीक्षा बोर्ड्स से जैन छात्र-छात्राएँ इस समारोह मे सम्मिलित हुए। 5 नवम्बर को प्रातःकालीन सत्र में उपस्थित होकर बच्चों ने मुनिश्री के द्वारा दिए गए जीवन को अनुशासित एवं जनोपयोगी बनाने के महत्वपूर्ण निर्देश (Tips) ग्रहण किए। दोपहर को 'जैन क्विज' के माध्यम से बच्चों ने जैनधर्म के संबंध में आवश्यक सामान्य जानकारी हासिल की और मुनिश्री के समक्ष अपने मन में उठने वाली जिज्ञासाओं (क्वेरीज़) का तर्कसंगत, सही और वैज्ञानिक समाधान पाकर प्रसन्नता का अनुभव किया। दोपहर में ही व्यक्तिगत रूप से विद्यार्थियों ने अपने माता-पिता के साथ मुनिश्री के समीप बैठकर बातचीत का आनन्द उठाया। रात्रिकालीन सत्र में इन्दौर से पधारे बी.एस. भण्डारी एवं दिल्ली के श्री जी.पी. राव के द्वारा केरियर के संबंध में अत्यन्त उपयोगी मार्गदर्शन प्राप्त किया। साथ ही इन्दौर से पधारे प्रख्यात कवि प्रोफेसर सरोज कुमार एवं इन्दौर की ही सुश्री आकांक्षा पाटनी ने बच्चों को जैनधर्म के वैज्ञानिक पहलुओं पर महत्वपूर्ण बातों से अवगत कराया।

Award Ceremony 2005

Senior Awardees receiving Award with Gawan & Jeket meritorious position in Graduation & Selection in professional courses

6 नवम्बर की सुबह आई. आई. टी., बम्बई से पधारी चीफ गेस्ट श्रीमती वनमाला जी ने सन् 2001 में यंग जैना अवार्ड पाने वाले विद्यार्थियों का उनकी स्नातक डिग्री अच्छे अंकों से उत्तीर्ण होने पर दीक्षान्त-समारोह की तरह गाउन पहनाकर ट्राफी के द्वारा सम्मानित किया ! जिसे देखकर हजारों दर्शक एवं उपस्थित बच्चे अभिभूत हो उठे और बच्चों ने मन ही मन संकल्प किया कि हम भी भविष्य में अपनी लगन और मेहनत से यह सम्मान हासिल करके अपने परिवार, समाज और राष्ट्र का नाम रौशन करेंगे। दीक्षान्त समारोह में चेन्नई से पधारी सुश्री एन.बी. त्रिलोक सुन्दरी ने B.E. (Electronic & Communication) में 85% अंक प्राप्त करके, सुश्री पूजाश्री (उज्जैन) ने मेनेजमेन्ट साइंस में 92% अंक प्राप्त करके एवं अंजली जैन (सागर), पूजा पहाड़िया, (गुना) स्वाति जैन (शिवपुरी), वसुधा जैन (आगरा) ने अपनी उपलब्धियों से बच्चों को प्रभावित किया। स्पेशल अवार्डीज़ में विदिशा की सुश्री संगीता ने, जो कि Handy Capped है, अपनी मेहनत और लगन से टापिंग में गोल्ड मेडिल प्राप्त करके सभी दर्शकों को आश्चर्यचकित कर दिया। क्षणभर को सारा पाण्डाल तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा और लोगों की आँखें खुशी और गर्व के आँसुओं से भीग गयीं। स्पेशल अवार्डीज़ में ही थानागंजी (राजस्थान) के टेबिल टेनिस खिलाड़ी और IAS की परीक्षा में 151वीं Rank पाने वाले श्री सुकेश जी जैन का सम्मान करके सभी ने गौरव का अनुभव किया। श्री सुकेशजी से बच्चों ने IAS की परीक्षा के लिए उपयोगी मार्गदर्शन भी लिया। पल्लवी जैन (नागपुर), प्रीति जैन (विलासपुर), नूपुर जैन (आगरा), अजिता के. शाह (भावनगर) एवं रुचि जैन (जयपुर) की उपलब्धि जानकर बच्चों ने अत्यन्त प्रसन्नता एवं उत्साह व्यक्त किया। जयपुर की रुचि जैन ने अपने सुमधुर स्वरों में गाए मंगलगान से सारे वातावरण को सुरभित कर दिया। वे UGC और Net क्वाफाइड हैं एवं टी.सीरीज और टिप्स जैसी नेशनल फैम पाने वाले कैसेट को अपने स्वरों से सजाने वाली ख्यातिप्राप्त गायिका हैं।

वर्ष 2004 में 12वीं कक्षा में अवार्ड पाने वाले हमारे जैन छात्र-छात्राओं में से इस वर्ष श्री विक्रम जैन (कोटा) ने IIT-JEE की परीक्षा में 195वीं Rank, सौरभ जैन (अशोकनगर) ने CPMT में 72वीं Rank, सौरभ जैन

N.B. Trilo Sundri (Chennai) receiving Award as a Senior Awardee for complete your degree in B.E. (85%)

Preeti Sanghi (Jaipur) receiving Award as a senior Awardee for complete your degree in B.Com. (78%)

Saransh Jain (Bhopal) receiving Award for selection in CPMT 56 Rank with meritorious position in XII (94.2%)

A. Abinantha Jain (Kancheepuram) receiving Award for selection in PMT 12 Rank with meritorious position in XII (96.12%)

(गढ़ाकोटा) ने MPPMT में 9वीं Rank, शशांक जैन (अजमेर) ने PET में 4th Rank, गरिमा जैन (जयपुर) ने CA-PE-1 और CS-Foundation में क्रमशः 29वीं और 3rd Rank तथा नमिता जैन (जयपुर) ने पर्ल एकेडमी ऑफ फैशन डिजायनिंग में BA. (Horn.) में चयनित होकर पुनः यह अवार्ड प्राप्त करके हमारे समारोह को गौरवान्वित किया।

जैन क्विज में शत प्रतिशत सफलता पाने वाले गुना (म.प्र.) नगर के श्री आशीष जैन को श्रीमती सुशीला पाटनी (आर. के. मार्बल्स) के द्वारा सम्मानित किया गया। जैन क्विज में निर्धारित 15 अंकों में से 14 अंक पाने वाले 82 जैन छात्र-छात्राओं को उनकी सफलता के लिए सराहा गया और सर्टिफिकेट प्रदान किया गया।

दोपहर के सत्र में ठीक 1.00 बजे से अवार्ड का सिलसिला प्रारम्भ हुआ जो सायं 4.00 बजे तक निरन्तर चला। जिसमें लगभग 400 विद्यार्थियों को चीफ गेस्ट के द्वारा मेडिल एवं ट्राफी प्रदान करके सम्मानित किया गया। शेष बचे हुए लगभग 150 विद्यार्थियों को उनका अवार्ड मुनिश्री के हाथों मन्दिरजी में प्रदान किया गया। बच्चों ने इस अवार्ड सेरेमनी से अत्यन्त प्रसन्नता और उत्साह का अनुभव किया और अपने जीवन को ऊँची शिक्षा पाने के साथ-साथ संस्कारित बनाने का संकल्प ग्रहण किया।

XII^{th} के साथ IIT-JEE में 11वीं Rank पाने वाले चंडीगढ़ के मोविन जैन, CPMT में 56 वीं Rank पाने वाले भोपाल के सारांश जैन, CPMT में 292वीं Rank और RPMT में 2nd Rank पाने वाली जोधपुर की टैली जैन, PMT में 12वीं Rank पाने वाले कांचीपुरम के ए. अभिनाथ राजु, AIEEE में 59वीं Rank पाने वाले और Bits Pilani में चयनित यतीश जैन AIEEE में 191वीं Rank पाने वाले एवं एयरोनाटिक्स से B.Tech. में चयनित एवं डिफेन्स रिसर्ज डवलपमेन्ट आर्गेनाइजेशन द्वारा साइंजिस्ट के रूप में स्वीकृत वंडावाशी नगर (तमिलनाडू) के ए. शरणराज तथा PET में 54वीं Rank पाने वाली उज्जैन की सोनम जैन की उपलब्धि की लोगों ने काफी सराहना की। मैत्री समूह ने उन्हें ब्लेजर के साथ मेडिल एवं स्पेशल ट्राफी द्वारा सम्मानित किया।

XII के 916 जैन छात्र-छात्राओं में से साइंस बॉयज में कुचामन सिटी के पाटनी एवं गर्ल्स में हैदराबाद की दीपिका जैन ने क्रमशः 97.65% एवं 97.27% अंक (Percentile) प्राप्त करके प्रथम स्थान प्राप्त किया।

XII कामर्स Boys में कुचामन सिटी के ही अभिषेक जैन एवं गर्ल्स में तिरुवन्नामलई की आरती व्ही ने क्रमश 94.57% एवं 94.35% (Percentile) प्राप्त करते प्रथम स्थान पाया। XII आर्ट में जयपुर की साक्षी जैन ने 92.70% (Percentile) प्राप्त करके प्रथम स्थान पाया। इसी तरह 10th Boys में चेन्नई के जे. राजीव कुमार ने एवं Girls में जयपुर की निकिता जैन ने क्रमशः 95.40% एवं 95.20% अंक पाकर प्रथम स्थान पाकर सभी का मन मोह लिया।

Telly Jain (Jodhpur) receiving Award for selection in RPMT 24 Rank and CPMT 292 Rank with the meritorious position in XII (89.86%)

Yatish Jain (Bhiwani) receiving Award for selection in AIEEE 59 Rank (in state) in BITS Pilani with the meritorious position in XII (89.45%)

A. Saranraj (Vandavasi) receiving Award for selection in AIEEE 191 Rank with the meritorious position in XII (94.0%)

Sonom Jain (Ujjain) receiving Award for selection in PET 54 Rank & AIEEE 248 Rank with the meritorious position in XII (85.4%)

Handicapped होने के बावजूद भी प्रकाह (महाराष्ट्र) के पंकज जैन एवं ग्वालियर की प्रियंका जैन ने अच्छी योग्यता हासिल की तथा 4x100 मीटर रिले में इंटरनेशनल अवार्ड पाने वाले, टेबिल टेनिस के खिलाड़ी एवं 10km.walking में गोल्ड, सिल्वर एवं ब्रास मेडिल पाने वाले हुबली (पश्चिम बंगाल) के प्रतीक एम. धारा ने अपनी उपलब्धियों से इतना प्रभावित किया कि लोग बहुत देर तक करतल ध्वनि करके अपनी खुशी जाहिर करते रहे।

5 एवं 6 नवम्बर को लगभग 500 जैन छात्र-छात्राओं ने एक जैसे शुद्ध वस्त्र धारण करके मुनिश्री की आहार चर्या में सम्मिलित होकर उन्हें आहार-दान दिया। 4-4 बच्चों ने हाथ से स्पर्श करके आहार देने का आनन्द उठाया। आहार के उपरान्त शोभायात्रा के रूप में अशोक नगर के युवाओं द्वारा दिव्यघोष की मधुर ध्वनि के साथ सभी ने सम्मिलित होकर इस समारोह को अविस्मरणीय एवं ऐतिहासिक बना दिया।

बच्चों ने समारोह में अपनी भावनाएँ व्यक्त करते हुए लिखा है कि अत्यन्त अनुशासित और व्यवस्थित इस समारोह से उन्होंने अपने जीवन को अनुशासित बनाने और अपने कार्य के प्रति समर्पित रहने की शिक्षा ग्रहण की है। उनका यह आत्मीय सम्मान उन्हें परोपकारी, ईमानदार और विनम्र बनने की प्रेरणा देता रहेगा। यही इस समारोह का वास्तविक मूल्यांकन है। बच्चों ने जिस तरह प्रोग्राम को अपना मानकर अपने अनुभव और महत्वपूर्ण सुझाव लिखे हैं, हम उनका सम्मान करते हैं और यथायोग्य संशोधन करके प्रोग्राम को बच्चों के लिए प्रेरणाप्रद बनाने की कोशिश करेंगे। ❑❑❑

Jain Quiz 2005

Aashish Jain, Guna (100%)

निम्नलिखित का मात्र 1 अंक कम रहा -

(1) Rahul Jain, Bhopal; (2) Pridodhanjsy Jain, Satna; (3) Richin Banghal, Shadhora; (4) Chiraq Jain, Jaipur; (5) Ankit Jain, Badhar; (6) Rahul Satbhaiya, Sagar; (7) Vinit Jain, Shahgarh; (8) Anishul Attbhaiya, Garhakota; (9) Minish Kumal Jain, Garhakota; (10) Amit Jain, Kota; (11) Sakshee Jain, Vidisha; (12) Shishir Jain, Indore; (13) Priyank Jain, Shivpuri; (14) Aakesh Jain, Garjbasoda; (15) Atul Jain, Khura; (16) Pradeep Jain, Dikoli; (17) Nishant Jain, Amarpatan; (18) Shubham Jain, Agra; (19) Deepika Jain, Pindari; (20) Anu Sinqhai, Chanderi; (21) Nidhi Jain, Renwal; (22) Surbhi Jain, Bina; (23) Pnesi Jain, Sagar; (24) Rajni Jain, Hatta; (25) Nidhi Jain, Sagar; (26) Rimi Jain, Ashok Nagar; (27) Priyanka Jain, Ashok Nagar; (28) Kamini Jain, Indore; (29) Surbhi Jain, Renwal; (30) Astha Jain, Mehidpur City; (31) Meqha Jain, Khurai; (32) Ruchi Agrawal, Thanagaji; (33) Richa Jain, Shahdol; (34) Devshree Baijatya, Kuchaman City; (35) Ridhi Jain, Jaipur; (36) Shehal K. Shah, Ratlam; (37) Priyanka Jain, Shivpuri; (38) Sudnya A. Shah, Osmanabad; (39) Surbhi Jain, Tendukheda; (40) Amita Jain, Chhatanpur; (41) Deepali Jain, Sagar; (42) ITI Jan, Ganj Baseda; (43) Minish Jain, Sawai Madhopur; (44) Autl Kumar Jain, Sagar; (45) Himanshu Jain, Gwalior; (46) Reetesh Jain, Ashok Nagar; (47) Ratnali Chandhary, Ashok Nagar; (48) Sandhya Jain, Hisar; (49) Pragati Jain, Dongargoan; (50) Namrta Jain, Tikamgarh; (51) Ankit Jain, Ashok Nagar; (52) Naveen Kumar Jain, Banda; (53) Atul Jain, Ashok Nagar; (54) Anshul Jain, Sirorj; (55) Dipika Patni, Jaipur; (56) Ashu Gurha, Ashok Nagar; (57) Pranita Jain, Bhopal; (58) Prachi Jain, Vidisha; (59) Brajendra Kumar Jain, Devendra Nagar; (60) Poorvi Jain, Khimlasha; (61) Basant Jain, Sagar; (62) Sonali Jain, Deori; (63) Rajul Jain, Deori; (64) Sonam Jain, Tikamgarh; (65) Sandeep Jain, Niwali; (66) Harshad Mahajan, Karanja; (67) Adeesh Kumar Jain, Gorjhamar; (68) Samiksha Jain, Shahpur; (69) Adit Sethiya, Ramgagmandi; (70) Mayank Jain, Ashok Nagar; (71) Rahul Jain, Katni; (72) Rohul Jain, Ganour; (73) Ekta Jain, Bhopal; (74) Ankit Jain, Gwalior; (75) Bulbul Soni, Khandwa (76) Swati Jain, Ambah; (77) Seema Jain, Shivphri; (78) Priynka Jain, Shivpuri; (79) Veena Jain, Sagar; (80) Mahima Jain, Shahpur; (81) Pallavi Jain, Vindhya Nagar; (82) Neha Jain, Deori.

Sangeeta Jain (Vidisha) receiving Award for Gold Medal in typing (Handicapped)

मुनि क्षमासागरजी की कविताएँ

अपना घर

चिड़िया तुम आती हो
मेरे घर
मुझे अपना घर
तब बहुत अच्छा
लगने लगता है।
तुम बना लेती हो
अपना घर
मेरे घर में
मुझे यह भी
अच्छा लगता है।
मैं जानता हूँ
तुम मेरे घर
नहीं आती
अपने घर आती हो
पर अपने घर
आने के लिए
तुम्हारा मेरे घर आना
मुझे अच्छा लगता है
सचमुच
तुम्हारे घर ने
मेरे घर को
अपना घर बना दिया।

प्रतिदान

चिड़िया ने
अपनी चोंच में
जितना समाया
उतना पिया
उतना ही लिया,
सागर में जल
खेतों में दाना
बहुत था।
चिड़िया ने
घोंसला बनाया इतना
जिसमें समा जाए
जीवन अपना
संसार बहुत बड़ा था।
चिड़िया ने रोज
एक गीत गाया
ऐसा जो
धरती और आकाश
सब में समाया
चिड़िया ने सदा सिखाया
एक लेना
देना सवाया।

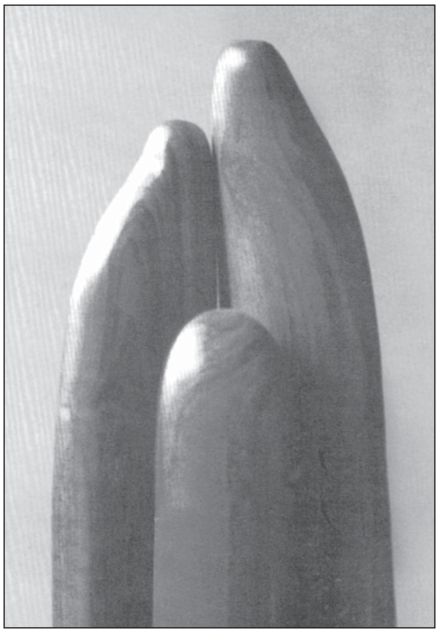

घोंसला

मैंने चिड़िया को
घोंसला बनाते देखा है
मैंने उसे
दाना चुगते
और झट से
आकाश में
उड़ते देखा है
मैं चाहता हूँ
कि चिड़िया
मुझे भी
यह सब सिखाए
कि किस तरह
जमीन से
जुड़े रहकर
आकाश में
उड़ा जा सकता है,
कि किस तरह
असीम आकाश में
उड़ने का अहसास
एक घोंसले में
रहकर भी
जीवित रखा जा सकता है।

('अपना घर' से साभार)

FEELINGS

(About Award Ceremony 2005)

- 5-6 Nov '2005 Morena Young Jaina Award ceremony was a tour to Discipline, Achievement, Encouragement Emotions, Inspiration, Motivation and more over understanding our religion Jainism.

  Young Jaina Award was a true art of Encouragement for students and their parents. Firstly it provided support to what we are doing, secondly it gave honor to not only us but to our parents and last but not the least it fringes hope to face hard time and discouragement. This hope is coupled with faith in Jainism and its power of looking every aspect scientifically.

  The session of Prof. Rao about Career was full of ideas which will lead us to our bright future and provides us with direction and procedure for bright career.

  Maitree Samooh the organizer of Young Jaina Award is a true example of disciplined team-workmanship. Maitree Samooh an organization which follow religious and scientific approach hand in hand and this is because they follow the principles and path as shown by Muni Shree. **Noopur Jain,** Agra

- अद्‌भुत, आश्चर्यजनक एवं अविस्मरणीय कार्यक्रम था। यदि कार्यक्रम में उपस्थित नहीं हो पाते तो हमारा बहुत बड़ा नुकसान हो जाता - ऐसा अहसास हुआ। हमने संकल्प किया है कि प्रतिवर्ष इस कार्यक्रम में उपस्थित होने का प्रयास करेंगे। हमारे पिता (महेन्द्र जैन) का अहसास है कि अभी तक साक्षी बिटिया का परिचय था कि साक्षी मेरी बेटी है। किन्तु मैत्री समूह के इस कार्यक्रम के पश्चात् परिचय की भाषा ही बदल गई, अब यह परिचय है कि मैं साक्षी का पिता हूँ। **साक्षी जैन,** विदिशा, X

- किसी का सम्मान अत्यन्त सम्माननीय तरीके से कैसे किया जाता है यह सबसे बड़ा सबक हमने यहाँ सीखा। भ्रष्टाचार के माहौल में भी उच्च आदर्शों के साथ अपने केरियर को सँवारने का साहस पाया। पहली बार सीखा, समझा और विश्वास पाया कि भारतवर्ष में भी बड़े-बड़े समारोह को समयबद्ध और अनुशासन के साथ गरिमामय ढंग से सम्पन्न किया जा सकता है। समाज सेवा की भावना को और ज्यादा स्थायित्व मिला। यह प्रयास कई सोए हुए लोगों में दृढ़ आस्था जगाने में सफल हुआ होगा, ऐसा विश्वास है। **एकता जैन,** भोपाल (म.प्र.), X

- This program is very good programme in All Indian festival, occasions and other ceremonies. This Award function is a 'Prerna' for children to progress in his or her life. I donot know that this programe is too good but I know that this programe is too good of **see-saw-thin** programe. **Namrta Jain,** Tikamgarh, XII

- Young Jain Award पूरे भारतवर्ष में सवसे विशाल और अद्‌भुत कार्यक्रम है। इस कार्यक्रम में प्रत्येक अवार्डी से कुशल-क्षेम पूछना और प्रसन्नता जाहिर करना अत्यन्त सराहनीय है। यह समारोह मेरे जीवन का Turning Point बन गया है। जब में अवार्ड सेरेमनी में पण्डाल में बैठा तो मेरी आँखें चकाचौंध हो गईं तथा मुझे लगा कि मैं दुनिया की सबसे बेहतरीन जगह पर बैठा हूँ। हम तो आयोजन में सम्मिलित होकर यह भी भूल गए कि हमें घर भी लौटना है। मैं तो इसे मात्र कार्यक्रम न कहकर विभिन्न परिवारों का विशाल मिलन समारोह ही कहूँगा।

  रोमिल जैन, कटनी (म.प्र.), XII

- जैन युवा प्रतिभा सम्मान एक ऐसा सुखद क्षण है जो जीवन भर भुलाया नहीं जा सकता। यह एक ऐसा सर्वोच्च सम्मान है जो सभी सम्मानों में अग्रणी है। यह सम्मान एक बाग की तरह है जिसमें विभिन्न प्रदेशों से आए अतीव सुन्दर फूलों का समावेश किया गया था। यह सम्मान एक ऐसा कदम है जो हम बच्चों को सफलता के शिखर पर ले जाएगा।

  ईति जैन, XII

- There is no words for the kind Co-Operation, arrangement and award ceremony to write. I am only saying.

  दिव्यच्चाची जेये प्रचिती
  तेथे कर माझे जुलती

  Maitree Samooh is great.
  I Salute it.

  Kalyani V. Raibagkr Jain, Paratwada, XII

- It was really great pleasure for me to attend this ceremony. Before I reached here and attended the program, I was not really sure that I would gain such a lot from this program. I enjoyed this, overall ceremony very much and got many realistic thought which I feel I will definitely follow now. The moral values provided by Mahaaraajji were not new but the way he explained and made us understand encouraged me so much that I will definitely follow as much as I can.

  Truly speaking. I never thought there are many students who follow Jainism so strictly but, now I realize I was totally wrong. Those students encouraged me so much that now I am very confident in me that, I will also believe in following them.

  Its really a very big task to continue each and every program on schedule at the exact time. That made me to be more disciplined & punctual.

One more thing which I found very interesting and encouraging was the career councelling. I have attended many of them but no one could bring change in me so much as this one did at that moment.

Khushbu Surana, Guna (M.P.), XII

- बहुत ही शानदार, अद्‌भुत और अनूठा भव्य कार्यक्रम, जैसा सोचा और सुना था उससे कहीं ज्यादा अच्छा सब कुछ पाया।

  पूजा के द्रव्य की नन्हीं पैकेट्स ने मन मोह लिया। हर छोटी-छोटी बात का इतना ध्यान रखा गया। भोजन के समय मान-मनुहार कर परोसना, और लेने का आग्रह बार-बार करना, मन में यही विचार आता रहा कि हम खाना बनाकर रखकर आफिस चले जाते हैं, स्वयं लेकर खाने में बच्चों को कैसा लगता होगा या होस्टल में कैसे खाते होंगे। उस सबकी कमी यहाँ पूरी हो गई।

  इतना भव्य आयोजन और कोई हल्ला शोलगुल नहीं। बड़े ही सौहार्दपूर्ण वातावरण में कार्यक्रम बड़ा easy going, अद्‌भुत ड्रेस कोड, अनुशासन और बढ़िया संचालन। इतना अच्छा लगा प्रतिभाओं का सम्मान कि आँखें भर आईं, आँसू छलक पड़े और बच्चों को शुद्ध कपड़े पहनाने यह कहकर ले जाना कि अब आपके बच्चे हमारी जिम्मेदारी हैं। सच, कौन किसके लिए इतना करता है।

  सीमा जैन (माँ), **सपन जैन,** भोपाल XII

- यंग जैना अवार्ड 2005 के समापन पर जाते हुए मन व्यथित और दुःखी तो है लेकिन साथ ही साथ एक संतुष्ट का अनुभव हो रहा है कि आपाधापी के इस युग में जहाँ लोग अपनी खुशियाँ बाँटना नहीं चाहते वहीं इस तरह के आयोजनों के माध्यम से सब एक दूसरे से मिलकर अपनी खुशियाँ लुटाते हैं।

  कहा जाता है कि भारत विविधताओं का देश है सो विविधता के दर्शन यंग जैना अवार्ड में ही हुए। भिन्न-भिन्न प्रान्तों के लोगों से मिलकर ऐसा लगा कि जैसे सब अपने हैं।

  आज के इस आधुनिकता से परिपूर्ण युग में जहाँ लोगों को अपनों के लिए फुरसत नहीं है वहीं हम बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के लिए मैत्री समूह का समर्पण देखते ही बनता है।

  पारुल राज जैन, गोटेगाँव (म.प्र.), XII

- The pleasure and memories attached to in every movement spent here is a lesson for lifetime. Such a stimulation of cultural value is unprecedented. This whole act is in itself a pioneering one. It is an inspiration for youngsters to nuture their dreams and aspirations. It is motivation that keeps on pulling the students all the year through. It instills in them a sense of healthy competition and a desire to stay and to give their best and with the blessing of Munishri achieve the best.

Keeping all this in mind and analyzing ensure us that there never can be a more educative and informative session. May this continue to inspire the coming talent who need a platform.

Shubham Jain, Agra (U.P.), XII

- अपनी भावनाओं को कैसे व्यक्त करूँ? भावनाएँ कागज पर नहीं उतार सकते। वो तो समा जाती हैं जीवन में रौशनी की किरण की भाँति। प्रोग्राम में आकर मुनिश्री की शरण पाकर लगता है संसार पीछे छूट गया, जीवन जीने का उद्देश्य प्राप्त हो गया है। मुनिश्री के दर्शनों की अभिलाषा से हम चौथी बार इस कार्यक्रम में शामिल होकर गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं। इस आयोजन ने हम सबको बढ़ने की प्रेरणा तो दी ही है परन्तु साथ ही हमें हौसला और रौशनी भी दी है जिससे हम प्रगति और सफलता के मार्ग पर साहस के साथ चल सकें। इतना सब समारोह में एक ही छत के नीचे कहाँ हर एक को मिल पाता है। ये तो हमारे सद्‌कर्म हैं जो मुनिश्री के पास बार-बार आने का मौका मिल जाता है।

  संध्या जैन, हिसार (हरियाणा), XII

- यंग जैना अवार्ड के माध्यम से प्रतिवर्ष मैत्री समूह के द्वारा सैकड़ों जैन प्रतिभाओं को सम्मानित किया जाता है जो कि सभी विद्यार्थियों को आगामी जीवन में यह सुनहरा अवसर प्राप्त करने के लिए प्रेरित करता है। रामगंजमण्डी में मेरी दीदी को यह सम्मान प्राप्त हुआ था जिसे देखकर मुझे प्रेरणा मिली थी जिसके फलस्वरूप यह सौभाग्य मुझे मिल सका। एक अवार्डी के रूप में जैसा सम्मान, जो प्यार और स्नेह मुझे प्राप्त हुआ वह एक सुखद अवसर है, एक स्वर्णिम स्मृति है, जो प्रतिक्षण मुझे अपने जीवन में सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता रहेगा।

  प्राची जैन, अशोक नगर, XII

- इस आयोजन के माध्यम से सबसे बड़ी चीज हमें जैनधर्म से जुड़ने और अपना भविष्य उज्ज्वल बनाने के लिए मुनिश्री का आशीर्वाद प्राप्त होता है। सीनियर अवार्डीज के सम्मान के लिए जो यूनिवर्सिटी के जैसा गाउन पहनाकर सर्टिफिकेट और ट्रॉफी दी गई वह देखकर मन गद्‌गद हो उठा क्योंकि इससे हम बच्चों को आगामी जीवन में कुछ नया करने की प्रेरणा मिली है जिससे हम दुबारा यह सम्मान पा सकें। प्रोग्राम के बारे में क्या कहूँ इतना ही कहूँगी कि प्रोगाम बहुत-बहुत बढ़िया था।

  प्राची सोधिया, सागर (म.प्र.), XII

- I had never visited such a function in my life. It was beyond my expectation. Definitely my self and my family are satisfied. I want to suggest you that please you create a website where the contact of famous personalities should be included in the web pages so that if any one wants to get into any profession or college i.e. any thing concerning education shall get help from this website. A complete information of any particular field where Jains are working or studying should be given.

  Hemarith. S.J., Tumkur (Karnataka), XII

- Young Jaina Award में शामिल होने का यह मेरा दूसरा अवसर है। इसे मुनिश्री के आशीर्वाद के साथ पाना ऐसा लगता है कि जैसा किसी तपते हुए मरुस्थल में शीतल जल से भरा सरोवर मिल गया हो। मुनिश्री का प्रेम, स्नेह और वात्सल्य से भरा आशीर्वाद पाकर लगता है कि मानो सारी दुनिया की सम्पत्ति हमारे ऊपर बरस गयी हो। मुनिश्री के लिए आहार-दान के लिए सभी बच्चे एक से रंग के शुद्ध वस्त्र पहने हुए जब पीछे-पीछे चलते हैं तो लगता है मानो भारत का कल, आज के साथ बिना किसी वैचारिक मतभेद के साथ भारत का भविष्य उज्ज्वल बनाने के पवित्र उद्देश्य से निकल पड़ा हो।

  मुनिश्री के प्रवचन में व्यक्त की गई अंतरंग भावनाओं को सुनकर ऐसा लगा कि अगले बार से इस प्रोग्राम का हो पाना अनिश्चित है। मुनिश्री हम बच्चे तो बहुत छोटे हैं क्या कहें। प्रोग्राम के बहुत अच्छा होने से उसकी आलोचना करने वाले ईर्ष्यालु भी बहुत होते हैं उनकी बात सुनकर हम प्रभावित न हों। पूरे भारत में यह एक अकेला प्रोग्राम है। हम बच्चों का मुनिश्री एवं मैत्री समूह के सेवाभावी और समर्पित मित्रों से हाथ जोड़कर निवेदन है कि इस प्रोग्राम को बन्द करने जैसी बड़ी सजा हम बच्चों को न दें। आप जो उचित और आवश्यक परिवर्तन हैं वह अवश्य करें। जैसे अवार्डीज के साथ मात्र एक ही परिवार जन आएँ और यदि एक से ज्यादा लोग आना चाहते हैं तो उनकी अलग से सशुल्क (कम से कम 100/-) व्यवस्था रहे जिससे व्यवस्था को नियंत्रित किया जा सके। 12th क्लास का प्रतिशत बढ़ाकर 80% किया जा सकता है और भी सुधार आप करना चाहें तो कर सकते हैं। प्रोग्राम की व्यवस्थाएँ सँभालने हम और हमारे जैसे सभी बच्चे अपनी पढ़ाई के दौरान यथासंभव अपना समय देकर आपका सहयोग करने को तत्पर हैं।

  मोहिनी जैन, सागर (म.प्र.), XII

- A student should get reward for his good performance and found Jaina Award full-fill their expectation. The arrangement done by Maitree Samooh was excellent. I do not even see arrangement like this and for such a huge crowd. We get knowledge related to Jain religion, related to our life, our studies etc. Tips that Muni Shri have given us are very useful for a successful life.

  I was to tell that in year 2003 we were only two students from Ganaur but when our friends knew about that (YJA) then they all want to get YJA and this year in 2005 we are 9 students from Ganaur who got this award. So, I think there is no need to tell that how YAJ encourages students for good performance in life.

  I feel a little saddy when I know that there are some critics for YAJ also. But I think criticism is the best guide for us to know our mistakes. So, please continue this beautiful program for us.

  Nitin Jain, Ganaur (Sonepat), XII

- यंग जैना अवार्ड का इतना विशाल अनुशासित भव्य आयोजन देखकर लगा कि वह ऐसी कौनसी शुभ घड़ी रही होगी जब मुनिश्री ने हम सभी बच्चों को प्रोत्साहित करने एवं धर्म के प्रति दृढ़ता रखने के लिए मैत्री समूह जैसे समर्पित और विनम्र लोगों का निर्माण किया होगा। मैं अभी तीन साल से लगातार इस आयोजन में सम्मिलित होने का सौभाग्य पाती आ रही हूँ पिछले वर्ष मेरी बहन को अवार्ड मिला था। इस आयोजन के बारे में जो जितना भी लिखा जाए वह सब सूरज को दीपक दिखाने के समान है। हम सभी अवार्ड पाने वाले बच्चे इस प्रोग्राम (जो हमें नितान्त अपना लगता है) के माध्यम से खुद सदाचारी बनकर दूसरों को भी सदाचार की प्रेरणा देंगे।

  दीपाली जैन, सागर (म.प्र.), XII

- इस समारोह में शामिल होना ही अपने आप में गौरव की बात है। जैन समाज को नई ऊँचाई पर पहुँचाने में मैत्री समूह जो कार्य कर रहा है वह मील का पत्थर साबित होगा। नई पीढ़ी पूरी ताकत से प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता पाने में जुट जाएगी और मुनिश्री के आशीर्वाद से बुलंदियों को छुएगी। मेरे कुछ सुझाव अगर अच्छे लगें तो अपनाए जा सकते हैं :

  1. जब विद्यार्थियों को व्यक्तिगत चर्चा के लिए आमंत्रित करते हैं तो उन तक आवाज पहुँच सके ऐसी छोटे से स्पीकर की व्यवस्था की जा सकती है।
  2. प्रतिभाशील बच्चों के माँ-पिता स्वयं अपने नाम व क्षेत्र की जानकारी के लिए पट्टिका लगाकर आवें तो अच्छा रहे।
  3. पर्यावरण सन्तुलन की दृष्टि से प्लास्टिक के गिलास, कटोरी, प्लेट आदि का उपयोग कम से कम किया जाए। उसके स्थान पर दूसरा विकल्प खोज लिया जाए।
  4. अवार्डी शपथपत्र भरकर रकिंग जैसी कुप्रथा को रोकने में अपना सहयोग दें।
  5. अवार्डी के लिए कार्यक्रम स्थल पर ड्रेस कोड के रूप में सफेद कुर्ता पायजामा खरीदने हेतु स्टाल लगाया जा सकता है जिससे एकरूपता कायम रह सकेगी।

  मैत्री समूह के तमाम समर्पित मित्रों का प्रयास, सेवा भावना, मदद करने की तत्परता प्रशंसनीय और अविस्मरणीय है।

  रूपक जैन, वंडा (म.प्र.), XII

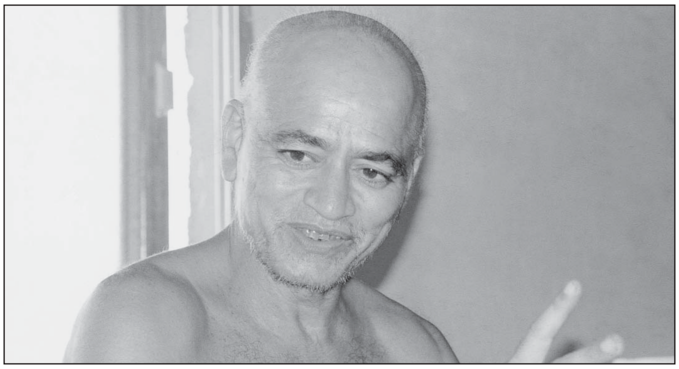

परीषह-विजय

आचार्य महाराज का उन दिनों बुन्देलखण्ड में प्रवेश हुआ था। उनकी कठोर निर्दोष मुनि-चर्या और अध्यात्म का सुलझा हुआ ज्ञान देखकर सभी प्रभावित हुए। कटनी में आए कुछ दिन ही हुए थे कि महाराज को ज्वर हो गया। पं. जगन्मोहनलालजी की देखरेख में उपचार होने लगा। सतना से आकर नीरजजी भी सेवा में संलग्न थे। एक दिन मच्छरों की बहुलता देखकर पंडितजी ने रात्रि के समय महाराज के चारों ओर मच्छरदानी लगवा दी।

सुबह जब महाराज ने मौन खोला तो कहा कि यह सब क्या किया? पण्डित ने जवाब तो पहले ही सोच लिया था, सो बोले कि ''महाराज! आप तो शरीर के प्रति निर्मोही हो, उपचार भी नहीं करने देते। पर क्या करें, ज्वर के कीटाणुओं से आपका शरीर इतना विषाक्त हो गया है कि आपको काटने वाले मच्छरों को पीड़ा होती है। उन बेचारों की सुरक्षा के लिए यह उपचार करना पड़ा।''

आचार्य महाराज अस्वस्थता के बाद भी खूब हँसे। कहने लगे कि ''पण्डितजी! संसारी प्राणी अपने शरीर के प्रति ऐसे ही तर्क देकर उसी की सुरक्षा में लगा है और निरन्तर दुःखी है। मोक्षार्थी के लिए ऐसी शिथिलता से बचना चाहिए और परीषह-जय के लिए तत्पर रहना चाहिए। कर्म निर्जरा तभी संभव होगी। आपने साधु पर ऐसा उपसर्ग क्यों किया?'' पण्डितजी विनत भाव से आगम के अनुरूप चर्या करने वाले, परीषह-विजयी, शिथिलताओं से दूर रहने वाले, कर्म-निर्जरा से तत्पर आचार्य महाराज के चरणों में झुक गए और हमेशा के लिए उनके भक्त हो गए। ❑❑❑

अनुशासन

मैंने सुना है एक दिन रात्रि के समय जब लोग आचार्य महाराज की सेवा में व्यस्त थे तब किसी की ठोकर लगने से तेल की शीशी गिर गई। शीशी का ढक्कन खुला था सो तेल भी फैल गया। सभी थोड़ा घबराए, पर आचार्य महाराज मुस्कराते रहे। सुबह आचार्य वंदना के बाद आचार्य महाराज चर्चा करते-करते बोले कि ''देखो शिष्य और शीशी दोनों में डॉट लगाना कितना जरूरी है। जैसे शीशी में डॉट (ढक्कन) न लगा हो तो उसमें रखी कीमती चीज गिर जाती है, ऐसे ही शिष्य को डॉट (अनुशासन के लिए प्रताड़ना) न लगाई जाए तो स्वच्छन्द होने और मोक्षमार्ग से विचलित होने या गिर जाने की संभावना बढ़ जाती है।''

शीशी गिरने की इस जरा सी घटना से इतना बड़ा संदेश दे देना यह आचार्य महाराज की विशेषता है। - **मुनि क्षमासागर**

हमारा सोच

जंगल में भटके 6 लोगों को जोर से भूख लग रही थी। तभी उन्हें फलों से लदा जामुन का एक पेड़ दिखाई दिया।

1. खुश होकर पहले आदमी ने कहा : 'इस पेड़ को काटकर गिरा देते हैं, तब जीभरकर पके हुए जामुन खाएँगे।'
2. दूसरा कहता है : 'पूरा पेड़ काटने की जरूरत नहीं है, बड़ी डालियाँ काटकर गिराने से भी काम चल जाएगा।'
3. तीसरा कहता है : 'नहीं, ऐसा करने की जरूरत नहीं है। छोटी डालियाँ काटने से भी काम सफल हो जाएगा।'
4. चौथा कहता है : 'अरे भाई, जामुन के गुच्छे गिराने से भी काम चल जाएगा, छोटी डालियों को क्यों काटें?'
5. पाँचवाँ कहता है : 'नहीं, नहीं! गुच्छे भी काटकर क्यों गिराना? सभी पेड़ पर चढ़ जाते हैं और वहीं बैठकर चुन-चुनकर पके हुए जामुन खा लें।'
6. अन्त में छठा बोला : 'मेरी बात ध्यान से सुनो। हम सभी भरपेट खा सकें, इससे ज्यादा तो पके जामुन नीचे गिरे पड़े हैं। इनसे यदि हम अपनी भूख मिटा सकें तो ऊपर चढ़ने की, तोड़ने की या पेड़ काटने की क्या जरूरत है।'

सार : कहानी में पेड़ को काटकर गिराने का विचार स्वार्थ से भरा है। जबकि नीचे गिरे पके जामुन को चुन-चुनकर खाने का विचार उच्च, विवेकपूर्ण, स्वच्छ और अहिंसक है। ❑❑❑

जैन विज्ञान विचार संगोष्ठी

मुनिश्री के सान्निध्य में श्रुतपंचमी सन् 2006 के पावन अवसर पर एक संगोष्ठी करने का विचार चल रहा है, जिसके निम्नलिखित विषयों पर आप जानकारी प्राप्त करके या शोधपत्र लिख करके प्रेषित कर सकते हैं। सर्वश्रेष्ठ शोधपत्र के लिए 1100/- एवं द्वितीय व तृतीय शोधपत्र के लिए 500-500/- की सम्मान-राशि भेंट की जाएगी एवं सर्वश्रेष्ठ शोधपत्र के लेखन को संगोष्ठी में अपना शोधपत्र पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त होगा, जिसके लिए 1100/- मानदेय एवं द्वितीय श्रेणी का किराया मार्गव्यय के रूप में प्रदान किया जाएगा।

निम्नलिखित विषयों पर शोध करके शोधपत्र लिखे जा सकते हैं या सामग्री मैत्री समूह को प्रेषित की जा सकती है -

1. दही में होने वाले बैक्टीरिया को जैनदर्शन के अनुसार त्रस-कायिक या स्थावर-कायिक में रखा जावे।
2. दही में चना या दालें (डाइकॉट्स) मिलने पर उत्पन्न होने वाले बैक्टीरिया की जानकारी तथा उसमें सलाइवा (लार) मिलाने पर उत्पन्न हुए बैक्टीरिया की जानकारी।
3. वायु और जल में होने वाले बैक्टीरिया को त्रस कहेंगे या स्थावर।
4. जल, वायु और छाछ में होने वाले बैक्टीरिया में क्या अन्तर है?
5. बैक्टीरिया में रक्त, मांस आदि पाए जाते हैं?
6. रेफ्रीजरेटर से खाद्य सामग्री बाहर निकालने पर कितनी देर तक बाहर के वातावरण में सुरक्षित रह सकती है।

डॉ. अशोक कुमार जैन, ग्वालियर (म.प्र.)

जैन युवाओं के लिए केरियर की तलाश

वैसे तो 'केरियर' शब्द रोजगार, वृत्ति, आजीविका, व्यवसाय या उद्यम का प्रतीक है और हम यही तय करना चाहते हैं कि अपना जीवन-यापन करने और धन कमाने के लिए कौनसा काम करेंगे। किन्तु यह 'केरियर' शब्द का संकुचित अर्थ है। वास्तव में, केरियर शब्द मनुष्य के समग्र व्यक्तित्व को प्रतिबिम्बित करता है और रुपया कमाना उसका एक आनुषंगिक उद्देश्य है। रुपये कमाने में पूरी तरह सफलता नहीं मिलने के कारण ही अनेक लोग अपना केरियर तय नहीं कर पाते हैं और अपना कामकाज, रोजगार, व्यापार-व्यवसाय बदलते रहते हैं। ऐसे लोगों की असफलता तथा उससे उत्पन्न निराशा ही नई पीढ़ी को खासकर चौदह वर्ष से पच्चीस वर्ष तक के युवक-युवतियों को परेशान किए हुए है और जब उनसे पूछा जाता है कि वे क्या करना चाहते हैं तो उनका उत्तर होता है कि जहाँ भी और जैसा भी काम और कमाई का साधन मिल जाए तथा जिसमें भी तरक्की और कामयाबी की गुंजाइश हो।

केरियर का चुनाव करने में अक्सर माता-पिता, अभिभावक, बड़े भाई-बहन, मित्र तथा शिक्षक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं अक्सर निर्णय लेने में उनका दबाव भी रहता है। मगर ये सभी लोग दूसरों की कामयाबी और अपने अनुभव को आधार बना कर मार्गदर्शन देते हैं। बहुत-सी बार वे अपनी जिम्मेदारी, सीमाएँ, व्यक्तिगत सोच, ईर्ष्या, प्रतियोगिता तथा उपलब्ध सुविधाओं को ज्यादा महत्व देते हैं। जिसके बारे में निर्णय लिया जाना है, उसकी क्षमता, योग्यता, आदतें, रुचि, पसंदगी तथा प्रगति की संभावनाओं पर कोई ध्यान नहीं देता। दूसरों को आगे जाते देखकर या तो उसे धकेला जाता है या रोक दिया जाता है। इसलिए तो युवक युवतियों को अपना भविष्य समझ में नहीं आता है। वे अपनी इच्छा ही ढंग से बता नहीं पाते कि वे क्या बनना चाहते हैं या क्या करना चाहते हैं।

युवा पीढ़ी को यह तो सोचना ही होगा कि क्या सबके सब लोग डॉक्टर, प्रबन्धक, वैज्ञानिक, शिक्षक, पत्रकार, नेता या सरकारी अधिकारी बन गए तो किसान, मजदूर, मिस्त्री, ड्रायवर, क्लीनर, हम्माल, रसोइया, कम्पाउण्डर, नर्स, क्लर्क, कारीगर कौन बनेगा? उत्पादन तथा मूल्य-वृद्धि वाली सेवाओं में कौन लगेगा? आर्थिक विकास कैसे होगा? इसलिए हर व्यक्ति का काम समान रूप से उपयोगी और महत्वपूर्ण माने बिना केरियर का सही चुनाव नहीं हो सकता है।

मुश्किल यही है कि जब केरियर की बात करते हैं तो हम पी.ई.टी., पी.एम.टी., सी.ए.टी., पी.एस.सी. जैसी प्रतियोगिता परीक्षाओं के माध्यम से मिलने वाले अवसरों की ही सोचते हैं। मगर सच तो यह है कि आकाश असीमित है और भविष्य उज्ज्वल है। न केवल धन कमाने की बल्कि नाम और यश कमाने की तथा लोगों की भलाई के लिए काम करने की कोई सीमा नहीं है। पढ़ाई या नौकरी ही इसका एकमात्र रास्ता नहीं है। कम से कम यह तो मानना ही होगा कि प्रतियोगिता परीक्षाओं के अलावा भी केरियर की ओर आगे बढ़ने के बहुत से रास्ते हैं। हम उन रास्तों को तलाशने तथा तलाशने के बाद आगे चलने से डरते हैं। उनका एक कारण यह है कि हमने अपने केरियर के बारे में खुद निर्णय नहीं लिया है। हमारे मन में पक्का निश्चय ही नहीं है। हमने अपने जीवन का लक्ष्य ही निश्चित नहीं किया है।

केरियर का ठीक से चुनाव करने के पहले आपको अपने भावी जीवन का स्वरूप निर्धारित करना होगा। स्वयं को जैन कुल के वंशज कहने वाले व्यक्ति को स्वयं भी जैन बनाना होगा और जीवन-पर्यन्त जैन धर्म के तत्वों के अनुरूप जीवन-यापन करना होगा। न केवल नाम और कर्म से वरन् समग्र व्यक्तित्व में जैनधर्म का प्रतिबिम्ब झलकना चाहिए।

यह समझ में आना मुश्किल है कि जैन होने या किसी खास धर्म के सिद्धान्तों में विश्वास रखने का केरियर रोजगार या व्यवसाय से क्या रिश्ता है और केरियर को चुनते समय उनका क्यों ध्यान रखा जाए? केरियर या व्यवसाय शुरू हो जाने पर अथवा सेवा-निवृत्ति के बाद भी धर्म-ध्यान और तपस्या से जीवन को सुधारने पर प्रयास किया जा सकता है। सत्य, अहिंसा, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह व अनेकान्त के तत्वों को जानने, समझने और आचरण में उतारने पर ही आप जैन कहलाने के अधिकारी बनते हो। रुपया कमाने के लिए झूठ बोलने वाला, मुनाफाखोरी, कालाबाजारी व टेक्स चोरी करने वाला या जीवों की हत्या करने, कराने और करते हुओं को ठीक समझने वाला या महिलाओं, बच्चों व कमजोर लोगों का शोषण करने वाला जैन कैसे हो सकता है? मगर जब डॉक्टर, इंजीनियर, वकील, चार्टर्ड अकाउन्टेण्ट या सरकारी नौकर बनने पर जोर इसलिए दिया जाए कि वहाँ रुपया कमाना आसान है और धनसम्पत्ति संचित करने के हजारों रास्ते होते हैं तो आप न तो अपने व्यक्तिगत चरित्र के साथ और न केरियर या व्यवसाय के साथ न्याय कर सकते हो। इसलिए नासमझ लोगों की भीड़ से प्रभावित होकर केरियर का चुनाव न कीजिए, वरन् ऐसा केरियर चुनिए जो आपकी अपनी आत्मा के कल्याण के लिए सहायक हो।

डॉ. बी.एस. भण्डारी
इन्दौर

आपके पत्र

यह एक समन्वय है ज्ञान, बुद्धि और धर्म का। यह हमें प्राचीन और परम्परा रीतिरिवाजों का वर्तमान में आधुनिक विचारों से सम्बन्ध बताने वाला महत्वपूर्ण न्यूज लेटर है। हमारे मन में उठ रहे विभिन्न सवालों का सर्वसंगत जवाब इसमें मिलता है। धर्म की बातों से परिचित करा के हमारे व्यक्तित्व का विकास करने में सहयोगी है। इसके माध्यम से परिवार, समाज और राष्ट्र का नाम रोशन करने वाली प्रतिभाशाली युवापीढ़ी से परिचय हो जाता है। वास्तव में यह हम विद्यार्थियों को धर्म से जोड़ने का अनूठा और प्रशंसनीय कार्य है।

ज्योति जैन, कोटा

मुझे इस न्यूजलेटर का बड़ी बेसब्री से इन्तजार रहता है। इससे मुझे जो सुख मिलता है वह शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकती। इसका मुझे बड़ा सहारा है। जब कभी मन उदास होता है। जीवन में नीरसता-सी छा जाती है उन क्षणों में इस न्यूज लेटर द्वारा मुझे वह जोश और उत्साह प्राप्त होता है जो एक सच्चे मित्र से ही प्राप्त हो सकता है। इसके पुराने सभी अंकों को मैं कई बार पढ़ चुकी हूँ। न्यूज लेटर को मैं मुनि का प्रेमभरा आशीर्वाद मानती हूँ। **नेहा जैन**

यह न्यूजलेटर हमारे सपनों को जमीन पर उतारने का मनोबल और धैर्य हमें देता है। कुछ कर दिखाने की प्रेरणा हमें मिलती है। सम्पूर्ण भारतवर्ष में रहने वाले जैन विद्यार्थियों को सहेजने, सँवारने और उनके व्यक्तित्व को निखारने का पवित्र कार्य इस मेगजीन के द्वारा हो रहा है। **चारुता संघी,** अंजनगाँव (महा.)

इस छोटी सी लगने वाली पत्रिका से हमें बड़ी-बड़ी महत्वपूर्ण बातों की जानकारी घर बैठे मिल जाती है मुझे आपके प्रश्न और आपके पत्र बेहद पसन्द हैं। मैत्री समूह के साथ इतने सारे लोगों का जुड़ते जाना मुझे बहुत प्रसन्नता से भर देता है।

हे गुरुवर! पौधा लगाया तो संभालते भी
संगीत दिया है तो स्वर भी देते रहिए
यह शीश झुका है आपका पावन चरणों में
जब-जब हम बच्चे पुकारें हमें अपना आशीष देते रहिए।

मोनू जैन, बुढ़ार (म.प्र.)

जब Chirping Sparrow हमारे पास पहुँचता है तो ऐसा लगता है कि बहुत सी चहचहाती चिड़ियाँ महाराजजी का आशीर्वाद-उपदेश हमारे लिए लेकर आई हैं और अपने पंखों से सहलाकर हमें आगे बढ़ने का साहस दे रही हैं। मुझे डॉ. कौशकेन्द्र पाण्डेय द्वारा लिखी गयी महत्वपूर्ण चिट्ठी 'क्षमाक्षीलता' पढ़कर बहुत अच्छा लगा। इससे हमें प्रकृति के साथ सद्भावना रखने की शिक्षा मिली। हम प्रकृति के साथ जो कुछ भी कर बैठते हैं लेकिन प्रकृति एक माँ की तरह हमेशा हमारा अच्छा ही सोचती और करती है।

राहुल जैन, दमोह (म.प्र.)

It inspired me, my friends and my juniors too. It given us knowledge of religion & also other friends which we all need. I was a awardee in award function. I met many children who were saying that in future we too will recive this award & will gain fame in all India. So, award function inspires and encourages all of us to do something better. This news letter helps us to come close to our religion because of its columns like Truth about Tradition, Q & A

Sonal Jain, Ashok Nagar

Thank you for such a great news letter. As a sprrow comes in the morning, wakes us, chirping & tetting us about beautiful nature, on the same way your newsletter Chirping Sparrow as per its name comes and wakes up knowledge about Jain religion, education and carrer building.

Reenush Sogani, Jaipur (Raj.)

In latest newsletter, the description of Rakha Sootra shows that inspite of all the inventions & development of science why we should not believe in our culture & traditions.

In this proliferation of development the basics of humanity have been left behind. We have to get it back. Chirping Sparrow is just initial attempts now and we have to go long. **Prany Sachin,** Gotegoan (M.P.)

Indeed, to receive the latest issue of chirping sparrow is one of the zealious moment. It spreads light of Jainism, thus provides spiritual treatment. The colums like Truth about-tradition and Q & A are marvellous. The darkness scatters my dormant prestige, revives curiosity is satisfied. I try to follow religious rules in course of student life so I can put my step forward in way of self consciousness and introspection. **Priyanshu Jain**
Awagarh-Etah (U.P.)

Endless are the words which compliment for chirping sparrow. The moral which I received from this magazine has changed my way of thinking & living. My outlook of dealing has become classic. Truely & honestly speaking about it is that by reading it, it seems that Mahaarajji him self is giving teaching by sitting in front.

Swati Jain, Vidisha

I received the new edition of chirping sparrow. It was as usual full of interesting facts & matters on moral values. The artical "Does pray heals" was liked the most by me as it strengthens the saying of our Rishi-Munis; that there in another force called prayer besides the medicines which when done by pure mind, has miraculous effects & even it works when the medicines have failed. Really in this materialistic world, prayer with faith has its unique importance. **Nikhil Jain**
Gwalior (M.P.)

पत्र आए :

1. नेहा जैन, दमोह (म.प्र.)
2. अंकुश जैन, खानपुर (राज.)
3. स्वामिनी तारण, सिरोज (म.प्र.)
4. मेघा एच. टोपीवाला, सूरत (गुजरात)
5. अंकित जैन, सी-312124
6. दीपक जैन, कारापुर (म.प्र.)
7. अरुण बजाज, देवास (म.प्र.)
8. स्मिता जैन, इन्दौर (म.प्र.)
9. अंजली जैन, अजयगढ़ (म.प्र.)
10. प्रिंसी जैन, बरेली
11. दिशा जैन, सिरोंज
12. क्षेमा पाटोदी, उज्जैन
13. चार्मी जैन, जूनागढ़
14. अपूर्वा भारिल्ल, गंजबासोदा (म.प्र.)
15. वैभव जैन, दमोह
16. प्रियंका जैन RJA 4004
17. प्रतीक्षा जैन UPS 4001
18. सोनम जैन, देवास (म.प्र.)
19. सचिन जैन, 101265 पांडिचेरी
20. अंकित जैन, करेली (म.प्र.)
21. पंकज जैन 140004
22. क्षितिज जैन

YOUR SPACE

We the people

Life is full of philosophical talk
Some people listen and then mock.
Some just ignore and they walk,
But very few try to fall this paradox.

Some find it difficult an abstruse
While some take it easy and hold it loose.
No matter how much they are confused.
They can always find ways to excuse.

Materialism is begining to grow
People use others and then throw
They just sit in a boat and begin to row.
Without thinking wheather it will-make their future glow.

People always seen to be pretending
Based on concepts of giving and taking
Devoid of morals and high thinking
These talks are never ending...

When I compare myself with others
I am no way different or better
Everyone understands it sooner or later.
But still wants to remain away from this matter.

Pooja Jain, B.Tech., III year
Kota (Raj.)

Life

Life, as I write this word -
Looks beautiful!
But has many hidden faces -
Life is like human - beings
Ever - changing.
Life is like a river,
Ever flowing.
Life is like a drop,
Still at times.
Life is like a flower,
Blossoms and dies.
Life is like the monsoon,
Unpredictable.
Life is like a garden.
Full of variety.
Life is like a woman's eyes,
Who knows how deep!

Priyanka Jain, Ajmer

Munishree

You are there
When I call
You are there
When I fall
You are there
When I sleep
You are there
When I weep
Thank you for being there

Happy Jain, Vidisha

महत्वपूर्ण चिट्ठी

जिंदा हैं संवेदनाएँ

एक दिन मैं कॉलेज से लौट रही थी। शाम का समय था, सड़क पर काफी भीड़ थी, अभी मैं कुछ दूर चली ही थी कि कुछ टकराने की बहुत जोर से आवाज आई व उसी के साथ लोगों की आवाज में भी उत्सुकतावश कि क्या हुआ है देखने के लिए उस और चल पड़ी, वहाँ जाकर देखा तो लगभग उन्नीस-बीस साल का एक लड़का सड़क पर खून से लथपथ पड़ा था, उसकी बाइक किसी गाड़ी से टकरा गई थी। लोग उसे देख रहे थे बातें कर रहे थे, लेकिन कोई भी उसे अस्पताल ले जाने के लिए तैयार न था, सभी का कहना था कि कौन पुलिस के चक्कर में पड़े, तभी दो नवयुवक वहाँ आकर रुके और बिना कुछ सोचे उन्होंने उसे उठाया और अस्पताल ले जाने लगे, लोगों ने उनकी मदद करने की जगह उन्हीं से सवाल कर डाले। क्या वे उसे जानते हैं! कौन लगता है ? वह उनका। उन लड़कों में से एक लड़के ने लोगों के अनेक सवालों का सिर्फ एक जवाब दिया। क्या किसी की जान बचाने के लिए उसका कोई रिश्ता होना जरूरी है। ये कहकर वह लड़के तो लेकर निकल गए, पर वहाँ खड़े लोगों को इंसानियत का सबक सिखा गए, साथ ही यह सोचने पर भी मजबूर कर गए। क्या वाकई में आज के नौजवान लापरवाह व बेकार हैं।

- अंशु जैन

आप भी लिखिए ऐसी ही एक चिट्ठी। हो सकता है कि आपकी लिखी कोई बात जब लोगों तक पहुँचे तो उनका जीवन ही बदल जाए।

Printed at : Jaipur Printers, Jaipur • Ph. : 0141-2373822